

# डैनियल की पुस्तक - संख्या एक सौ बारह

इश्माएल का भविष्यवाणी-संबंधी प्रतीकवाद का अनावरण: धनुर्धर से 1,44,000 पर मुहर लगाने वाले तक

Jeff Pippenger  
2024-03-02

और परमेश्वर उस बालक के साथ था; और वह बड़ा हुआ, और जंगल में रहने लगा, और धनुर्धर बन गया। उत्पत्ति 21:20.

इश्माएल एक धनुर्धर बन गया; यह युद्ध का प्रतीक है और रोम के विरुद्ध लाए जाने वाले कार्यकारी न्याय का भी प्रतीक है।

जो लोग बाबुल देश से भागकर बच निकले हैं, उनकी यह पुकार है कि वे सियोन में हमारे परमेश्वर प्रभु का प्रतिशोध, उसके मंदिर का प्रतिशोध, घोषित करें। बाबुल के विरुद्ध धनुर्धारियों को एकत्र बुलाओ; हे धनुष खींचनेवालो, सब के सब, उसके चारों ओर छावनी डालो; उसमें से कोई न बचकर निकले। उसके काम के अनुसार उसे बदला दो; उसने जो कुछ किया है, उसके अनुसार तुम भी उसके साथ करो; क्योंकि उसने प्रभु के विरुद्ध, इस्राएल के पवित्र के विरुद्ध, घमंड किया है। यिर्मयाह 50:28, 29.

धनुर्धर उसके कर्मों के अनुसार बाबुल को प्रतिदान देते हैं, और यह प्रतिदान शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के समय, प्रकाशित-वाक्य के अठारहवें अध्याय की दूसरी वाणी के साथ आरम्भ होता है, जब बाबुल का प्रगतिशील कार्यान्वयनात्मक न्याय प्रारम्भ होता है।

और मैंने स्वर्ग से एक और आवाज़ सुनी, जो कहती थी, 'हे मेरे लोगो, उसमें से बाहर निकल आओ, ताकि तुम उसके पापों में सहभागी न बनो, और उसकी विपत्तियों में से कुछ भी न पाओ। क्योंकि उसके पाप स्वर्ग तक पहुँच गए हैं, और परमेश्वर ने उसके अधर्मों को स्मरण किया है। जैसा उसने तुम्हारे साथ किया, वैसा ही उसे प्रतिफल दो; उसके कामों के अनुसार उसे दुगुना दो; जिस प्याले को उसने भर रखा है, उसी में उसे दुगुना भरकर दो। जितना उसने अपने आप को महिमा दी है और ऐशो-आराम से जीती रही है, उतना ही उसे यातना और शोक दो; क्योंकि वह अपने मन में कहती है, "मैं रानी बनकर बैठी हूँ, मैं विधवा नहीं, और मुझे कोई शोक न होगा।"' प्रकाशितवाक्य 18:4-7.

इश्माएल और उसकी माता हागर को ज्येष्ठ पुत्र के अधिकार का वारिस बनने से रोका गया, और उन्हें बाहर निकाल दिया गया। इस प्रकार, ईर्ष्या इस्लाम की भविष्यवाणीमूलक प्रेरणा बन गई, और युद्ध उनकी भविष्यवाणीमूलक वृत्ति बन गया। पहला उल्लेख सारा द्वारा इश्माएल और उसकी माता पर लगाए गए प्रतिबंध को शामिल करता है, और उनका "प्रतिबंध" परमेश्वर के वचन और इतिहास भर में इस्लाम का एक प्रमुख भविष्यवाणीमूलक लक्षण बन गया। इश्माएल के वंशज जंगली लोग होने थे, जिनका हाथ हर मनुष्य के विरुद्ध था, और उनके जंगली स्वभाव का प्रतिनिधित्व घोड़ों के कुल के जंगली अरबी गधे द्वारा किया गया है। इस प्रकार, पहली और दूसरी विपत्तियों का इस्लामी युद्ध क्रोधित घोड़ों पर सवार योद्धाओं के रूप में दर्शाया गया है।

इस्लाम अंतिम वर्षा का संदेश है, और यह उचित ही है कि तीनों 'हाय' तीन विशिष्ट भविष्यवाणी की रेखाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि अंतिम वर्षा की पद्धति "पंक्ति पर पंक्ति" है। जब पहली दो रेखाओं की भविष्यवाणी संबंधी विशेषताओं को एक साथ लाया जाता है, तो वे तीसरे 'हाय' की रेखा स्थापित कर देती हैं। ये तीनों भविष्यवाणी की रेखाएँ एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगने की अवधि को दर्शाती हैं। वे तीनों रेखाएँ अंतिम वर्षा के उंडेले जाने की अवधि का प्रतिनिधित्व करती हैं, क्योंकि 11 सितम्बर, 2001 को तीसरा 'हाय' आने पर अंतिम वर्षा की फुहारें शुरू हुईं।

“पिछली वर्षा परमेश्वर की प्रजा पर बरसने वाली है। एक सामर्थी स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरना है, और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से आलोकित हो जाने वाली है।” Review and Herald, April 21, 1891.

मुहरबंदी की अवधि का प्रतिनिधित्व उस काल ने भी किया जो 11 अगस्त, 1840 को शुरू हुआ और 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के आगमन के साथ समाप्त हुआ। वह समयावधि हबक्कूक अध्याय दो में भी दर्शाई गई थी। मिलराइट इतिहास ने हबक्कूक अध्याय दो की पूर्ति की, और ऐसा करते हुए उसकी शुरुआत 11 अगस्त, 1840 को स्वर्गदूत के उतरने से हुई, और उसका समापन 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के आगमन पर हुआ।

हबक्कूक के दूसरे अध्याय में बताया गया है कि दर्शन के अंत में वह दर्शन "बोलेगा"। प्रकाशितवाक्य के दसवें अध्याय के तीसरे पद में, स्वर्गदूत ने ऊँची आवाज़ में पुकारा (बोला), और 22 अक्टूबर, 1844 को उसी स्वर्गदूत ने यह शपथ खाई (कहा) कि "अब समय न रहेगा।" हबक्कूक का प्रहरी, दूसरे अध्याय के पहले पद में, 11 अगस्त, 1840 पर स्थापित है, क्योंकि उसी समय प्रहरी अपनी आवाज़ें ऊँची करते हैं।

1888 के विद्रोह में, जिसे सीस्टर व्हाइट ने प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के उस स्वर्गदूत का प्रतिनिधि बताया, जो अपनी महिमा से पृथ्वी को उजियाला करने वाला था, पहरेदारों (जोन्स और वैगनर) ने अपनी "आवाज़ें" तुरही के समान ऊँची कीं, ताकि वे परमेश्वर के लोगों को उनके अपराध दिखाएँ, क्योंकि उनका संदेश लाओदीकिया के लिए संदेश था। 11 सितंबर, 2001 को, जो 1888 के इतिहास द्वारा पूर्वरूपित था, प्रभु ने अपने अंतिम दिनों के लोगों को यिर्मयाह के पुराने पथों पर वापस ले आया, जहाँ पहरेदारों की बात नहीं सुनी गई। स्वर्गदूत का उतरना पहरेदारों के भविष्यसूचक आगमन को चिह्नित करता है।

जो "आवाज़" 11 अगस्त, 1840 को पहुँची, वह प्रहरियों के माध्यम से प्रेषित की गई थी, और यिर्मयाह से कहा गया कि यदि वह अपनी निराशा के बाद अपने विश्वास और परमेश्वर पर भरोसे में लौट आए, तो वह परमेश्वर का प्रवक्ता बन जाएगा। जो दर्शन विलंबित था, वह जब अंततः 22 अक्टूबर, 1844 को आ पहुँचा, तो उसने "बोला"। हबक्कूक के दूसरे अध्याय का काल, जो मिलराइट इतिहास में पूरा हुआ, एक लाख चवालीस हज़ार के मुहरबंद किए जाने की अवधि को दर्शाता है।

यह समझना आवश्यक है कि 11 अगस्त, 1840 से 22 अक्टूबर, 1844 तक की अवधि एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी को दर्शाती है, जो वह समय है जब अंतिम वर्षा उँडेली जाती है। यह आवश्यक है कि 'रेखा पर रेखा' की पद्धति द्वारा अंतिम वर्षा के संदेश की पहचान की जाए। वह विशेष काल, जो एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी है, भविष्यसूचक रेखाओं में बार-बार दर्शाया गया है, और ऐसा ही हबक्कूक अध्याय दो में भी है, जिसे सिस्टर व्हाइट ने सीधे तौर पर मिलराइट इतिहास में पूरा हुआ बताया है। वह यह भी बार-बार सिखाती हैं कि मिलराइट इतिहास, एक लाख चवालीस हज़ार के इतिहास में दोहराया जाता है।

उन भविष्यवाणियों के साथ, जिन्हें वे दूसरे आगमन के समय पर लागू मानते थे, ऐसी शिक्षा भी गुंथी हुई थी, जो उनकी अनिश्चितता और उत्कंठा की स्थिति के अनुकूल विशेष रूप से ढाली गई थी और उन्हें इस विश्वास में धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करने के लिए प्रोत्साहित करती थी कि जो बात अभी उनकी समझ के लिए अस्पष्ट थी, वह उचित समय पर स्पष्ट कर दी जाएगी।

इन भविष्यवाणियों में से एक हबक्कूक 2:1-4 की थी: 'मैं अपनी चौकी पर खड़ा रहूँगा, और मीनार पर अपना स्थान लूँगा, और यह देखने के लिए चौकसी करूँगा कि वह मुझसे क्या कहेगा, और जब मुझे ताड़ना दी जाएगी तब मैं क्या उत्तर दूँगा। तब यहोवा ने मुझे उत्तर दिया और कहा, दर्शन लिख, और पट्टों पर उसे स्पष्ट लिख दे, ताकि दौड़ते हुए भी पढ़ने वाला उसे पढ़ सके। क्योंकि यह दर्शन अभी भी नियत समय के लिए है; परन्तु अंत में यह बोलेगा और झूठ न बोलेगा। चाहे वह देर करे, उसकी प्रतीक्षा कर; क्योंकि वह निश्चय आएगा, वह देर न करेगा। देखो, जिसका मन घमण्ड से फूल गया है, वह उसके भीतर सीधा नहीं है; परन्तु धर्म अपने विश्वास से जीवित रहेगा.'

"1842 में ही इस भविष्यवाणी में दी गई यह आज्ञा—'दर्शन को लिख, और उसे पट्टिकाओं पर स्पष्ट कर दे, ताकि दौड़ता हुआ भी उसे पढ़ सके'—ने चार्ल्स फिच को दानियेल और प्रकाशितवाक्य के दर्शनों का निरूपण करने हेतु एक भविष्यवाणी संबंधी चार्ट तैयार करने के लिए प्रेरित किया था। इस चार्ट के प्रकाशन को हबक्कूक द्वारा दी गई आज्ञा की पूर्ति माना गया। परंतु तब किसी ने यह ध्यान नहीं दिया कि उसी भविष्यवाणी में दर्शन की पूर्ति में एक प्रतीत होने वाली देरी—एक ठहराव का समय—का भी उल्लेख है। निराशा के बाद यह शास्त्रवचन अत्यंत सार्थक प्रतीत हुआ: 'दर्शन अभी भी नियत समय के लिए है, परन्तु अंत में वह बोलेगा और झूठ न ठहरेगा; यदि वह देर करे, तो उसकी बाट जोहते रहो; क्योंकि वह अवश्य आएगा, वह विलंब न करेगा... धर्मो जन अपने विश्वास से जीवित रहेगा.'"

यहेजकेल की भविष्यवाणी का एक अंश भी विश्वासियों के लिए शक्ति और सांत्वना का स्रोत था: 'प्रभु का वचन मेरे पास आया, यह कहते हुए, हे मनुष्यसंतान, वह कौन-सी कहावत है जो तुम्हारे यहाँ इस्राएल देश में प्रचलित है कि, दिन खिंचते जाते हैं, और हर दर्शन निष्फल होता है? इसलिए उनसे कह, प्रभु परमेश्वर यूँ कहता है. . . . दिन निकट हैं, और हर दर्शन की सिद्धि. . . मैं बोलूँगा, और जो वचन मैं बोलूँगा वह पूरा होगा; अब वह और विलंबित न होगा।' 'इस्राएल के घराने के लोग कहते हैं, जो दर्शन वह देखता है वह बहुत दिनों के बाद का है, और वह दूर के समयों के विषय में भविष्यवाणी करता है। इसलिए उनसे कह, प्रभु परमेश्वर यूँ कहता है: अब से मेरे किसी भी वचन में विलंब न होगा, परन्तु जो वचन मैं बोल चुका हूँ वह पूरा होगा।' यहेजकेल 12:21-25, 27, 28। महान संघर्ष, 391-393।

मिलरवादियों ने न केवल अपने आप को दस कुँवारियों के दृष्टान्त और हबक्कूक अध्याय दो की पूर्ति करते हुए देखा, बल्कि वे इस निष्कर्ष पर भी पहुँचे कि जिस इतिहास में वे इन भविष्यवाणियों की पूर्ति कर रहे थे, वही इतिहास यहेजकेल द्वारा उसी इतिहास की पहचान भी है, जहाँ "हर दर्शन का परिणाम" पूरा होना था। इतिहास की वह रेखा जो एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी का प्रतिनिधित्व करती है, वही वह स्थान है जहाँ "हर दर्शन का परिणाम" पूरा होता है!

वे रेखाएँ, जो अंतिम वर्ष और एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी के कालों का प्रतिनिधित्व करती हैं, इस बात को स्थापित करने के लिए एक साथ लाई जाती हैं कि भविष्यवाणी का इतिहास सदैव अल्फा और ओमेगा की छाप लिए रहता है।

मिलेराइट इतिहास प्रकाशितवाक्य अध्याय दस के स्वर्गदूत की वाणी से आरंभ होता है, और उसी वाणी पर समाप्त होता है। 11 सितम्बर, 2001 प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की पहली वाणी से आरंभ होता है, और प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की दूसरी वाणी पर समाप्त होता है। हबक्कूक अध्याय दो पहरेदारों की वाणी से आरंभ होता है, और यिर्मयाह के पहरेदार की वाणी पर समाप्त होता है। पहली हाय मोहम्मद से आरंभ होती है, और मोहम्मद द्वितीय पर समाप्त होती है। दूसरी हाय इस्लाम के चार स्वर्गदूतों के मुक्त किए जाने से आरंभ होती है और इस्लाम पर अंकुश लगाए जाने पर समाप्त होती है।

जो पद्धति 'अन्तिम वर्ष' है, वह यशायाह की 'पंक्ति पर पंक्ति' पद्धति है, और अन्तिम वर्ष के संदेश की पहचान और स्थापना के लिए जो पंक्तियाँ एक साथ लाई जाती हैं, वे सदा ही अल्फा और ओमेगा की छाप लिए रहती हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय नौ का पहला हाय मुहम्मद से आरम्भ होता है और मुहम्मद द्वितीय पर समाप्त होता है। यह काल दो प्रकार के युद्धों में विभाजित है: पहला, रोम पर असंगठित हमले, जो अबूबकर के साथ पूरी तरह प्रारम्भ हुए; और फिर एक सौ पचास वर्षों की वह अवधि, जिसमें इस्लाम का पहला संगठित युद्ध सम्पन्न हुआ।

एक सौ पचास वर्षों को "पाँच महीनों" की समय-भविष्यवाणी द्वारा दर्शाया गया है। दूसरी विपत्ति में भी एक समय-भविष्यवाणी है, जो तीन सौ इक्यानवे वर्ष और पंद्रह दिन की है। इसलिए, चूँकि पहली और दूसरी विपत्तियों की भविष्यसूचक संरचना आरंभ के साथ अंत की पहचान कराती है, इसमें मुहरबंदी और एक विशिष्ट समयावधि के बीच एक विभाजन निहित है। मुहरबंदी की प्रक्रिया पहली विपत्ति के इतिहास की शुरुआत में दर्शाई गई है, और इसे दूसरी

विपत्ति के अंत में दर्शाया गया है।

पहले हाय में, पद चार में वर्णित मुद्रांकन के बाद जो आता है, वह “पाँच महीने” (एक सौ पचास वर्ष) है। “पाँच महीने” का उल्लेख दो बार किया गया है—एक बार पद पाँच में और फिर पद दस में। दूसरे हाय में 11 अगस्त, 1840 से 22 अक्टूबर, 1844 तक की मुद्रांकन प्रक्रिया से पहले जो है, वह पद पंद्रह की “घंटा, दिन, महीना और वर्ष” (तीन सौ इक्यान्वे वर्ष और पंद्रह दिन) की भविष्यवाणी है। एक ही निरंतर क्रम में, पाँचवीं और छठी तुरही मुद्रांकन प्रक्रिया के चित्रण के साथ आरंभ होती और उसी के साथ समाप्त होती हैं।

दो रेखाओं के रूप में, 'रेखा पर रेखा' लागू करने पर वे एक प्रारंभ और एक अंत की पहचान करते हैं, जो मोहम्मद प्रथम और मोहम्मद द्वितीय द्वारा चिह्नित हैं। 'रेखा पर रेखा' के अनुसार, वे प्रत्येक रेखा में दो भिन्न अवधियों की पहचान करते हैं, जो इसलिए उत्पन्न होती हैं क्योंकि प्रत्येक रेखा में समय-संबंधी भविष्यवाणी है। पहली विपत्ति के इतिहास में, इस्लाम को रोम को 'चोट पहुँचानी' थी, और दूसरी विपत्ति में, उसे रोम को 'मारना' था। पहली विपत्ति भालों, तलवारों और तीरों का युद्ध थी, और दूसरी विपत्ति ने हथियार के रूप में बारूद का परिचय कराया।

पद 10. और उनके पास बिच्छुओं के समान पूँछें थीं, और उनकी पूँछों में डंक थे; और मनुष्यों को पाँच महीनों तक हानि पहुँचाने की शक्ति उनमें थी। 11. और उनके ऊपर एक राजा था, जो अथाह कुंड का स्वर्गदूत है; जिसका नाम इब्रानी भाषा में अबद्दोन है, पर यूनानी भाषा में उसका नाम अपोल्योन है।

अब तक, कीथ ने हमें पहली पाँच तूरहियों के बजने के विवरण प्रदान किए हैं। परंतु अब हमें उनसे विदा लेकर, यहाँ प्रस्तुत की गई भविष्यवाणी के नए पहलू के अनुप्रयोग की ओर बढ़ना है; अर्थात्, भविष्यसूचक कालावधियाँ।

उनकी शक्ति मनुष्यों को पाँच महीने तक हानि पहुँचाने की थी.—1. प्रश्न उठता है, वे किन मनुष्यों को पाँच महीने तक हानि पहुँचाने वाले थे?—निस्संदेह वही जिन्हें बाद में वे मार डालने वाले थे (देखें पद 15); 'मनुष्यों का तिहाई भाग,' या रोमी साम्राज्य का तिहाई— अर्थात् उसका यूनानी विभाग।

2. उन्हें अपनी यातना देने का कार्य कब शुरू करना था? ग्यारहवाँ पद इस प्रश्न का उत्तर देता है।

(1) 'उन पर एक राजा था।' मोहम्मद की मृत्यु से लेकर तेरहवीं शताब्दी के अंत के निकट तक, मुसलमान कई नेताओं के अधीन विभिन्न गुटों में बँटे हुए थे, और उन सब पर लागू होने वाला कोई सामान्य नागरिक शासन नहीं था। तेरहवीं शताब्दी के अंत के निकट, उस्मान ने एक ऐसी सरकार की स्थापना की, जो तब से ऑटोमन सरकार, या साम्राज्य, के नाम से जानी जाती है; यह बढ़ते-बढ़ते सभी प्रमुख मुस्लिम कबीलों तक फैल गई और उन्हें एक महान राजतंत्र में समेकित कर दिया।

(2) राजा का चरित्र। 'जो अथाह गर्त का दूत है।' दूत का अर्थ एक संदेशवाहक, एक सेवक या मंत्री होता है— अच्छा हो या बुरा— और वह हमेशा कोई आध्यात्मिक अस्तित्व नहीं होता। 'अथाह गर्त का दूत', अर्थात् उस धर्म का प्रधान धर्माधिकारी, जो उसके खुलने पर वहाँ से निकला। वह धर्म मुहम्मदी है, और सुल्तान उसका प्रधान धर्माधिकारी है। 'सुल्तान, या ग्रैंड सीन्योर, जैसा कि उसे अक्सर कहा जाता है, सर्वोच्च खलीफ़ा, या महायाजक भी है, जो अपने व्यक्तित्व में सर्वोच्च आध्यात्मिक गरिमा को सर्वोच्च लौकिक सत्ता के साथ जोड़ता है।' — World As It Is, पृ. 361.

(3) उसका नाम। इब्रानी में, 'अबद्दोन', विनाशक; यूनानी में, 'अपोल्योन', अर्थात् जो उन्मूलन करता है, या नाश करता है। दो भाषाओं में दो भिन्न नाम होने से यह स्पष्ट है कि शक्ति के नाम की अपेक्षा उसके चरित्र को प्रस्तुत करना अभिप्रेत है। यदि ऐसा है, तो दोनों भाषाओं में व्यक्त अर्थ के अनुसार वह एक विनाशक है। उस्मानी शासन का चरित्र सदैव ऐसा ही रहा है।

लेकिन उस्मान ने यूनानी साम्राज्य पर अपना पहला आक्रमण कब किया?—गिबन के अनुसार, Decline and Fall, आदि, 'उस्मान ने 27 जुलाई, 1299 को पहली बार निकोमीडिया के क्षेत्र में प्रवेश किया।'

कुछ लेखकों की गणनाएँ इस धारणा पर आधारित रही हैं कि यह अवधि उस्मानी साम्राज्य की स्थापना से शुरू होनी चाहिए; लेकिन यह स्पष्ट रूप से एक त्रुटि है; क्योंकि उनके ऊपर न केवल एक राजा होना था, बल्कि उन्हें पाँच महीनों तक मनुष्यों को यातना देनी थी। परंतु यातना की अवधि यातना देने वालों के प्रथम आक्रमण से पहले शुरू नहीं हो सकती थी, जो कि, जैसा ऊपर कहा गया है, 27 जुलाई, 1299 था।

इस प्रारंभिक बिंदु पर आधारित निम्नलिखित गणना जे. लिच द्वारा 1838 में 'मसीह का दूसरा आगमन, आदि' शीर्षक वाले ग्रंथ में तैयार कर प्रकाशित की गई थी।

"'और उनकी शक्ति पाँच महीनों तक मनुष्यों को हानि पहुँचाने की थी।' उनका अधिकार बस यहीं तक विस्तृत था—लगातार लूटपाट द्वारा यातना देना, परंतु राजनीतिक रूप से उनका संहार करना नहीं। 'पाँच महीने,' एक महीने में तीस दिन मानकर, कुल एक सौ पचास दिन होते हैं; और ये दिन, प्रतीकात्मक होने के कारण, एक सौ पचास वर्ष का संकेत करते हैं। 27 जुलाई, 1299 से आरंभ करके, ये एक सौ पचास वर्ष 1449 तक पहुँचते हैं। उस समस्त अवधि में तुर्क लगभग निरंतर यूनानी साम्राज्य के साथ युद्धरत रहे, फिर भी उसे विजित न कर सके। उन्होंने यूनानी साम्राज्य के कई प्रांतों पर कब्ज़ा किया और उन्हें अपने अधीन रखा, परंतु फिर भी कॉन्स्टैन्टिनोपल में यूनानी स्वतंत्रता बनी रही। पर 1449 में, जो इन एक सौ पचास वर्षों का समापन था, एक परिवर्तन आया, जिसका इतिहास अगली तुरही के अंतर्गत मिलेगा।" यूरियाह स्मिथ, दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य, 505-507.

यूरायाह स्मिथ जोसायाह लिच की एक सौ पचास वर्षों की गणना का हवाला देते हैं, जो पूरा होने पर अगली तुरही में तीन सौ इक्क्यानबे वर्ष और पंद्रह दिन की भविष्यवाणी के लिए आरंभ-बिंदु स्थापित करती है। इन दो परस्पर संबंधित समय-भविष्यवाणियों के संबंध में लिच की भविष्यवाणी पर टिप्पणी करते हुए सिस्टर व्हाइट ने लिखा:

"सन् 1840 में भविष्यवाणी की एक और उल्लेखनीय पूर्ति ने व्यापक रुचि उत्पन्न की। उससे दो वर्ष पूर्व, दूसरे आगमन का प्रचार करने वाले प्रमुख सेवकों में से एक, जोशिया लिच ने प्रकाशितवाक्य 9 की एक व्याख्या प्रकाशित की, जिसमें उस्मानी साम्राज्य के पतन की भविष्यवाणी की गई थी। उसकी गणनाओं के अनुसार, यह शक्ति... 11 अगस्त, 1840 को परास्त होने वाली थी, जब यह अपेक्षा की जा सकती है कि कॉन्स्टैन्टिनोपल में उस्मानी शक्ति टूट जाएगी। और मेरा विश्वास है कि यही बात सत्य पाई जाएगी।"

"ठीक उसी समय जो निर्दिष्ट किया गया था, तुर्की ने अपने राजदूतों के माध्यम से यूरोप की मित्र-शक्तियों का संरक्षण स्वीकार कर लिया, और इस प्रकार अपने को मसीही राष्ट्रों के नियंत्रण के अधीन कर दिया। इस घटना ने भविष्यवाणी को ठीक-ठीक पूरा कर दिया। जब यह ज्ञात हुआ, तब बहुत-से लोग मिलर और उसके सहयोगियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के सिद्धांतों की सत्यता के विषय में आश्चस्त हो गए, और आगमन आंदोलन को एक अद्भुत प्रेरणा मिली। विद्वान और प्रतिष्ठित पुरुष मिलर के साथ जुड़ गए, उसकी मान्यताओं के प्रचार और प्रकाशन—दोनों में; और 1840 से 1844 तक यह कार्य तीव्र गति से फैलता गया।" The Great Controversy, 334, 335.

पहली और दूसरी विपत्ति दो परस्पर संबंधित समय-भविष्यवाणियों से जुड़ी हुई हैं। पहली विपत्ति मुहर लगाए जाने के एक चित्रण से आरंभ होती है, और दूसरी विपत्ति 11 अगस्त, 1840 से लेकर 22 अक्टूबर, 1844 को सातवीं तुरही के बजने तक के इतिहास पर समाप्त होती है, जो स्वयं भी मुहर लगाए जाने का एक चित्रण है। आरंभ और अंत अल्फा और ओमेगा की छाप लिए हुए हैं, क्योंकि, जैसे उस इतिहास में जिसमें मसीह ने एक सप्ताह के लिए वाचा की पुष्टि की थी, यह अवधि दो भागों में विभाजित है। पहली अवधि पहले मोहम्मद से शुरू होती है और दूसरे मोहम्मद पर समाप्त होती है। दूसरी अवधि "परमेश्वर के सम्मुख स्थित सोने की वेदी के चारों सींगों से" आने वाली 'आवाज़' से शुरू होती है, और यह मसीह की 'आवाज़' पर समाप्त होती है, जो शपथ खाता है "उसकी, जो युगानुयुग जीवित है, जिसने आकाश और जो कुछ उसमें है, और पृथ्वी और जो कुछ उस पर है, तथा समुद्र और जो कुछ उसमें है, सब की सृष्टि की; कि अब समय न रहेगा।"

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।

"परमेश्वर की प्रजा की अतीत की यात्राओं के महान इतिहास के संबंध में संदेह पैदा करने के लिए शैतान मन में जो भी प्रश्न जगा सके, वह उसकी शैतानी महिमा को प्रसन्न करेगा और परमेश्वर के प्रति एक अपमान है। प्रभु का हमारे संसार में शक्ति और महान महिमा सहित शीघ्र आगमन होने का समाचार सत्य है, और 1840 में इसकी घोषणा में अनेक स्वर उठे।" Manuscript Releases, खंड 9, 134.